अध्ययन सामग्री
विषय- हिन्दी
सेमेस्टर- प्रथम(01) स्नातकोत्तर
प्रश्न पत्र- तृतीय(cc-03)
रामभक्ति काव्य और उसके प्रमुख कवि
पदनाम- डॉ स्मिता जैन
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एच डी जैन कॉलेज, आरा
12:26 ✓✓

Scanned with CamScanner

भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारामें रामभक्ति काव्य की लंबी परम्परा रही है। वेदों में कुछ स्थलों पर 'राम' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'राम'के जीवन से संबंधित पहला महाकाव्य 'वाल्मीकी रामायण' को स्वीकार किया जाता है। इस प्रेरणा से ही राम काव्य की परम्परा शुरू हुई वाल्मीकी रामायण ने केवल देश में ही नही बल्कि विदेश कों भी प्रभावित किया, और राम साहित्य रचा जाने लगा। वाल्मीकी की के राम मर्यादा पुरुषोत्तम थे। उसमें अवतारवाद नहीं था। उपनिषद् में राम को अवतार स्वीकार कर लिया गया था। पुराणों में भी राम काव्य दृश्य के प्रसंग दिखाई देते है। डॉ. सोनटक्केजीके अनुसार ''अगस्त–सुतीक्षण–सम्वाद संहिता में राम के अनेक अलौकिक गुणों का समावेश कर उन्हें विशेष महत्व दिया गया। अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, अद्भूत रामायण, युशुण्डि रामायण, हणुमं संहिता, राघवोल्लास आदि ग्रंथों में राम कथा की धार्मिक एवं दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत की गई। वराह, अग्नि, लिंग, वामन, ब्रम्ह, गरुड, स्कन्द, पद्मवैवर्त आदि पुराणों में राम कथा के अनेक प्रसंग दृष्टिगोचर होते हैं। ''बौद्ध, जैन ग्रंथों में भी राम कथा का प्रयोग हुआ है। धार्मिक ग्रंथों के अतिरिक्त अन्य संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश साहित्य में भी राम काव्य की सुदीर्घ परम्परा रही है।

राम काव्य का उद्भव वाल्मीकी रामायण से शुरू हुआ है। पश्चात रामभक्ति रामानन्द द्वारा विकसित होकर तुलसी के 'रामचरित मानस' के द्वारा हिन्दी भक्ति साहित्य में प्रवाहित हुई। तुलसी पूर्व विष्णुदास, अग्रदास, ईश्वरदास आदि ने रामकथा लिखी है किन्तु राम काव्य के मुख्य प्रवर्तक तुलसी ही रहे हैं।

३इ. २ राम भक्ति काव्य के प्रमुख कवि

भक्तिकालीन हिन्दी सगुण भक्ति काव्य के अंतर्गत राम भक्ति काव्य के प्रमुख प्रवर्तक तुलसीदासजी है। रामभक्ति की प्रतिष्ठा रामानन्द द्वारा हुई रामानन्द की भक्ति और विचार धारा से तुलसीदास प्रभावित थे। राम भक्ति काव्य विकास में कई कवियों ने अपना योगदान दिया है उनमें प्रमुख है – अग्रदास, ईश्वरदास, तुलसीदास, जन जसवंत, नाभादास, केशवदास, प्राणचंद चौहाण आदि है। यहाँ सभी का संक्षेप में परिचय देना समीचीन होगा।

Scanned with CamScanner

राम साहित्य के प्रवर्तक– महाकवि तुलसीदास

तुलसीदास के जन्म संबंध में अधिकांश विद्वानों में मतभेद है। अन्त: साक्ष्य के आधार पर इनकी जन्मतिथि सं. १५८९ (सन् १५३२) अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होती है। इनका जन्मस्थान राजापुर बताया जाता है। जनश्रुति के आधारपर तुलसीदासजी के पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। इनका विवाह दीनबन्धु पाठक की कन्या रत्नावली से हुआ था। इनका बचपन विपन्नावस्था में गुजर चूका था। माता–पिता के द्वारा छोड दिये जाने पर बाबा नरहरिदास ने इनका पालन–पोषण किया और ज्ञान–भक्ति की शिक्षा भी दी। विवाह पश्चात उन्हें सन्तान प्राप्ति हुई थी किन्तु अल्पायु में ही उसकी मृत्यु हुई। पत्नी के प्रति अत्याधिक आसक्ति थी। एक बार पत्नी द्वारा भर्त्सना– ''लाज न आई आपको दौरे आएहु साथ'' मिली तब वे दाम्पत्य जीवन से विमुख होकर प्रभुप्रेम की ओर उन्मुख हुए। उन्होंने कई जगह की तीर्थयात्रा की। अंतत: काशी में ही अपना स्थायी निवास बनाया। इसी अवस्था में साहित्य सर्जना आरंभ हुई। इनके गुरु नरहरि माने जाते हैं। इनके गुरु ने ही राम–कथा सुनाकर राम–भक्ति की ओर प्रवृत किया था। उनकी मृत्यु अत्यंत पीडादायी अवस्था में हुई।

तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या बारह है जो प्रामाणिक मानी जाती है, वह क्रमानुसार इस प्रकार है– वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, रामलला नहछू, जानकी मंगल, रामचरितमानस, पार्वती मंगल, कृष्ण गीतावली, गीतावली, विनयपत्रिका, दोहावली, वरवैरामायण और कवितावली आदि।

'वैराग्य संदीपनी में संत महिमा का वर्णन किया गया है। 'जानकी मंगल' में राम–जानकी विवाह वर्णन है। 'पार्वती मंगल' में पार्वती के जन्म और विवाहोत्सव का वर्णन है। 'कृष्णगीतावली' में कृष्ण की बाल लीला एवं गोपियों का विरह वर्णन है। 'विनयपात्रिका' में राम के प्रति कवि का विनयभाव अभिव्यक्त है। 'कवितावली' में कवित्त शैली में लिखा गया संग्रह है। 'रामचरित मानस' में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्रानुकूल प्रसंगों को विवेचित किया है।

तुलसीदास के लेखन पर तत्कालिन परिस्थितियों का प्रभाव दिखाई देता है। तुलसीदास कालीन समय का समाज नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से ऱ्हासोन्मुख था। अपनेयुगिन राजनीतिक स्थिति की आलोचना इस प्रकार की है–

'गोंड गँवार नृपाल महि, यवन महा महिपाल।
साम न दाम न भेद कलि केवल दण्ड कराल।।'

शासक अधिकारी के लिए लिखा है–

'जासुराज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नरक अधिकारी'

तुलसी समकालीन समाज में उच्च वर्ग में विलासिता, जाति–पॉति की प्रथा अधिक कठोर हो रही थी। मुस्लिम शासकों के अत्याचार बढ़ रहे थे। धार्मिक ऱ्हास हो रहा था। आर्थिक विपन्नता थी। तुलसीदासने स्वंय कहा है–

'खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि,
बनिक को न बनिज न चाकर को चाकरी'

तुलसी की मान्यता यह है कि एक अच्छे समाज एवं राष्ट्र निर्माण के लिए वर्ण व्यवस्था का होना जरुरी है–

Scanned with CamScanner

'बरनाश्रम निज निज धरम, निरत वेद पंथ लोग।
तल हि सदा पावहि सुख, जहिं भय शोक न रोग।'

तुलसी ने अपनी रचनाओं के लिए लोक भाषा को चूना। पूर्वी व पश्चिमी अवधी पर समाज अधिकार था। कहीं-कहीं ब्रज भाषा का भी प्रयोग किया है। इनकी भाषा संस्कृत के पण्डित होने कारण संस्कृत की कोमलकान्त पदावली की सुमधुर झंकर है। उन्होंने अपनी रचना शैली में महाकाव्य, मुक्तक, गीति इन तीनों का प्रयोग सफलता पूर्वक किया।

तुलसी ने अपनी रचनाओं में करुण, हास्य, वीर, भयानक बीभत्स आदि रसों का परिपाक मिलता है। उन्होंने उपमा, उत्प्रेक्षा, रुपक, संदेह, व्यतिरेक, अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। साथही उन्होंने छप्पय, दोहे, चौपाई, कुण्डलिया, सवैया, तोमर, त्रिभंगी आदि छंदों का सफलता पूर्वक प्रयोग किया है।

तुलसीदास के समूचे साहित्य में समन्वय भावना दृष्टिगोचर होती है। इस ओर संकेत करते हुए डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखते हैं- ''उनका सारा काव्य समन्वय की विरोह चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, ग्रार्हस्थ और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृत का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, कथा और तत्वज्ञान का समन्वय, ब्राम्हण्य और चण्डाल का समन्वय, पाण्डित और पाण्डित्य- रामचरित मानस शुरु से आखिर तक समन्वय का काव्य है।'' अत: तुलसी जनचेतनावादी नायक थे।

स्वामी रामानन्द

स्वामी रामानन्दजी का जन्म १४०० से १४७० ई. माना गया है। इनका जन्म काशी में हुआ था और इन्होंने वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य राघवानन्द से दीक्षा ग्रहण की थी। वर्णाश्रम में आस्था रखने वाले रामानन्दजी भक्ति मार्ग में उन्होंने सभी को समान मानते हुए निम्न वर्ग के भक्तों को अपना शिष्यत्व प्रदान किया। इनके शिष्यों में कबीर, रैदास, धन्ना, पीपा आदि थे।

स्वामी रामानन्दजी संस्कृत के पंडित थे। इन्होंने 'वैष्णव मताब्द भास्कर' और 'श्रीरामार्जुन-पध्दति' यह प्रमुख ग्रंथ लिखे हैं। रामानन्दजी की भक्ति-पध्दति का प्रभाव राम-भक्ति परम्परा पर लक्षित होता है। गोस्वामी तुलसीदास भी इनकी विचारधारा से प्रभावित थे।

रामानन्द जी का हिन्दी में हनुमान की स्तुति का पद इस प्रकार है -

'आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
जाके बल भरते महि काँपै। रोग सोग जाकी सियान ज्यांपै।
अंजनीसुत महाबलदायक। साधु संत पर सदासहायक ।।
गाढ परै कवि सुमिरों तोही। होहु दयाल देहु जस मोंहि।।'

स्वामी अग्रदास

स्वामी रामानंद की शिष्य परम्परा के राम-भक्त कवि स्वामी अग्रदास थे। इन्होंने कृष्णदास पयहरी से दीक्षा लेकर शिष्यत्व प्राप्त किया था। इन्हीं अग्रदास के शिष्य भक्त माल के रचयिता नाभादासजी थे। कृष्णदास पयहारी ने जयपुर के समीप गलता नामक स्थान में

Scanned with CamScanner

अपनी गद्दी स्थापित की थी। अग्रदासजी गलता गद्दी पर १५६६ ई. में विद्यमान थे। इनके प्रमुख ग्रंथ 'ध्यान मंजरी', 'अष्टयाम', 'हितोपदेश उपखाणाँ बावनी,' 'रामभजन मंजरी', 'उपासना-बावनी', 'कुंडलिया' आदि है। इनकी पद-रचना पढने पर पता चल है कि, इन्हें शास्त्रीय साहित्य का ज्ञान था। एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

कुंडल ललित कपोल जुगल अस परम सुदेसा।
तिनको निरखि प्रकाश लजत राकेस दिनेसा।
मेचक कुटिल विसाल सरोरुह नैन सहाए।
मुख पंकज के निकट मनो अलि छौना आए।।

इनका पद भी इस प्रकार है–

पहरे राम तुम्हारे सोवत। मैं मतिमंद अंन्ध नहिं जोवत।।
अपमारग मारग महिजान्यो। इंद्री पोषि पुरुषारथ मान्यो।।
औरनि के बल अनत प्रकार। अगरदास के रामअधार ।।

अग्रदासजी ने 'अग्रअली' नाम से स्वंय को जानकी सखी मान कर काव्य रचनायें की है। इनकी 'रामाष्टयाय' में सीता वल्लभ राम की दैनिक लीलाओं का चित्रण है।

नाभादास

यह तुलसीदास कालीन रामभक्त कवि थे। संवत १६५७ के लगभग वर्तमान थे। नाभादास अग्रदास के शिष्य थे। इनका प्रसिध्द ग्रंथ 'भक्त माल' संवत १६४२ के पीछे बना और प्रियदासजी ने उसकी टीका लिखी। इनकी 'अष्टयाम' की रचना रसिक-भावना को लेकर हुई है जिसमें राम की लीलाओं का वर्णन किया गया है।

ईश्वरदास

ईश्वरदासजी का जन्म १४८० ई. माना जाता है। उनकी सुप्रसिध्द कृति 'सत्यवती कथा' है इसका रचना काल १५०१ ई. है। रामकथा से संबंधित इनकी 'भरत मिलाप' और 'अंगद पैज' यह दो रचनाएँ प्रचलित है। 'भरत मिलाप' में राम के वनगमन के उपरान्त 'भरत-राम' भेट के करुण-कोमल प्रसंग को इस काव्य-कृति में पद्यबध्द किया गया है। ईश्वरदास की दूसरी रचना 'अंगद पैज' में रावण की सभा में अंगद के पैर जमाकर डट जाने का वीररसपूर्ण वर्णन मिलता है।

केशवदास

केशवदास का जन्म १५५५ ई में और मृत्यू १६१७ ई. माना जाता है। इनके द्वारा लिखे गए प्रमुख ग्रंथ कविप्रिया, रसिकप्रिया, रामचंद्रिका, वीरसिंहचरित, विज्ञानगीता, रतनबावनी, और जहांगीर जसचंद्रिका आदि है। इनमें से रामचन्द्रिका १६०१ ई. रामकाव्य परम्परा अंतर्गत प्रमुख कृति है।

Scanned with CamScanner

इन कवियों के अतिरिक्त रामकाव्य लिखनेवाले अन्य कवि प्राणचंद चौहान कृत 'रामायण महानाटक', सेनापत्रिकृत कवित्त रत्नाकर, कपूरचन्द्रकृत 'रामायण' आदि रचनाएँ उल्लेखनीय है।

Scanned with CamScanner